रिपोर्ट

नाम : प्रतीक्षा प्रकाश हल्दणकर

हा.क्र.:19P0140008

विषय : हिंदी प्रदेशो में भ्रमण

प्रस्तावना

बनारस!! जब हमें बताया गया की इस बार हम भ्रमण के लिए बनारस जा रहे हैं तो सबके चेहरे खुशी से खिल उठे। किसी को मिलते तो उनके पूछने से पहले ही उनको बनारस के बारे में कहते फिरते थे।मै सबसे पहले हमारी विभागाध्यक्ष प्रोफ़ेसर वृषाली माद्रेकर जी को धन्यवाद कहना चाहती हु की उनोहोने इस यात्रा का आयोजन सफलता पूर्वक किया और हमे कम से कम खर्चे में इतनी शानदार यात्रा करने का मौका मिला हमारे सहपाठी और शिक्षकों ने मिलकर रेल विभाग से यात्र की पुरी जानकारी प्राप्त की और दिपक सर ने टिकट का इंतजाम किया । 7 फरवरी से 17 फरवरी तक की यात्र तय हुई गूगल द्वारा वहाँ की छोटी छोटी जानकारी प्राप्त कर ली थी जिसके कारण वहाँ क्या लेकर जाना है ये जानने में आसानी हुई वहाँ थंड कितनी है आदी बाते । सबसे पहले मैंन बेग का चुनाव किया और जहाँ भी जाती तो यात्रा में लगनेवाले सामान खरीद्ती। जैसे ही फरवरी का महीना आया कुतूहलता और बड़ी उसी बिच आ.ए.से का भी टेंशन था। वो खत्म होने के बाद हम ऐसे घर दौडे अब बस चले हम बनारस।

बचपन से ही मेरे दादाजी मुझसे से हमेशा बनारस की बातें किया करते थे। क्योंकि मेरा जन्म हिन्दू धर्म में हुआ है, अतः परिवार के सदस्यों के साथ बातचीत के दौरान अक्सर बनारस की बातें होती रहती थी। क्योंकि हमारे घर में काशी खंड का पाठ श्रावण महीने किया जाता है। इसी से बचपन से ही काशी देखने की बहुत इच्छा थी जो अब इस यात्रा द्वारा पूरी होने जा रही थी। जितना कुछ मैंने सुना और पढ़ा, उसके अनुसार- बनारस भारत के उत्तर प्रदेश राज्य का प्रसिद्ध नगर है। इसे 'वाराणसी' और 'काशी' भी कहते हैं। इसे हिन्दू धर्म में सर्वाधिक पवित्र नगरों में से एक माना जाता है ।इसके अलावा बौद्ध एवं जैन धर्म में भी इसकी महिमा अपरम्पपार है। यह संसार के प्राचीनतम बसे शहरों में से एक है। वाराणसी की संस्कृति का गंगा नदी एवं इसके धार्मिक महत्त्व से अटूट रिश्ता है। हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत का 'बनारस घराना' वाराणसी में ही जन्मा एवं विकसित हुआ है। भारत के कई दार्शनिक, कवि, लेखक, संगीतज्ञ वाराणसी में रहे हैं, जिनमें कबीर,

वल्लभाचार्य, रविदास, स्वामी रामानंद, मुंशी प्रेमचंद, जयशंकर प्रसाद,गिरिजा देवी, पंडित हरि प्रसाद चौरसिया एवं उस्ताद बिस्मिल्लाह खां आदि कुछ हैं।

इतना सब जानने के बाद, बनारस को देखना मेरा ख़्वाब बन चूका था। भ्रमण यह विषय को चुनकर उस ख़्वाब को हक़ीक़त में तब्दील करने का एक उत्तम जरिया जान पड़ रहा था। हम बखूबी जानते थे कि, विश्वप्रसिद्ध बनारस हिन्दू यूनिवर्सिटी, भारत की सर्वोत्तम यूनिवर्सिटियों में से एक हैं।

बनारस तक की यात्रा दो चरणों में पूर्ण होने वाली थी। पहले गोवा से मुबई, फिर मुबई से बनारस। इसप्रकार, हमारी कॉलेज से हम 53 विद्यार्थी,पहली मर्तबा अपने घर से इतना दूर, अपने सहपाठीयों के साथ एक बेहद रोमांचक सफ़र पर जाने के लिए तैयार हो चुके थे। इसी मनोबल के साथ शुरू हो गयी , “बनारस यात्रा” ।

बनारस यात्रा

पहला दिन

7 फरवरी, २०२०

वह दिन आ ही गया जिसका इंतजार था यानी बनारस जाने वाल दिन सुबह जल्दी उठकरमॉ और मैं ने खाना बनाया मॉ पापा और भगवान का आशीर्वाद लेकर घर से निकली घरवालों ने मड्गाव रेलवे स्टेशन तक छोड़ने आए घरवालो के बिना पहली बार इतनें दूर जा रही थी तो डर तो लग रहा था ।लेकिन स्टेशन पर अपने सहपाटीयों को देखा तो लगा नहीं की दूर जा रही हूँ ।

सुबह 9:30बजे हम ट्रेन में बैठे ।सब अपनी-अपनी सीट पर बेठ्कर ग्रुप फ़ोटो के साथमड्गाव से मुबई की यात्रा की शुरुआत हुई ।ट्रेन छूटी तो लगा रंगीन सपने की शुरुआत हो गयी पूरी दिनभर गाने और गप्पेबाजी चलते रही। कोई फ़ोटो निकालने में व्यस्त तो कोई बाहर के नजारेदेखने में व्यस्त खिडक़ी के बाहर कोइ जान पहचान वाले स्टेशन दिखा तो एक दूसरें को बताते की अब हम कहाँ पहुंचे है। सभी अपने अपने ट्रेन के किस्से सुना रहे थे । कोई अन्ताक्षरी तो कोई दमशरारत खेलने में मस्त हमारे साथ साथ हमारे शिक्षक भी खेल में भाग लेते थे । जैस जैसे गोवा पीछे छूटता गया तो ट्रेन में भी उसका अनुभव होने लगा था । बाहर के नजारे बदल ने लगे थे । हमनें लगभग 1या 1:30बजे खाना खाने बैठे

हर एक डिबे से एक दुसरा ही स्वाद आ रहा था ।भिन्न भिन्न खाने के पदार्थ थाली में आकर सज गये थे सबने मिलकर एक दूसरें के खाने का आस्वद उठाया और थोड़ा बहुत रात के लिए भी बचाकर रखा था । खाना खाने के बाद सब लोग सुस्ता कर सोने के लिए चले । एक छोटी सी निद्रा के बाद फ़िर से जोश के साथ उठकर फ़िर से गाने की धुन में मस्त हो गये जब मुबई में पहुंचे तो वहाँ की बड़ी बड़ी इमारतें आकर्षण का केंद्र बन गई ।उसी के साथ डूबते हुए सूरज ने मन कोमोह लिया।

8 बजे पहुचने वाले थे लेकिन पहुचें 9 बजे थके हारे हुए दादर स्टेशन पे। लगा की पहुँच गये लेकिन वहाँ से दूसरें स्टेशन पर जाना था मुबई की लोकल ट्रेन में भीड़ से कचाकच भरी हुई और इथने समान के साथ 30सैकेण्ड में चढ़ना और उतरना था यही सोचकर डर लग रहा था। लेकिन हिमत करके चढ़ गए और किस्मत से लेडिज डिब्बे में ही चढ़े और थोडे लोग गड़बड़ी में लड़कोके डिब्बे में चढ़े जब स्टेशन आने वाला था तो पहलें हीदरवाजे के पास जाकर खड़े हो गये और जैसे ही ट्रेन रुकि तो जल्दि से उतरगए और अपने अपने दोस्तो को ढूँढने लगे तो पता चला कि हमारी मिस और हमारे साथ की लड्की पीछे छूट गई वे लोग ट्रेन में चढ़ ही नहीं सके उतने में वे दुसरी ट्रेन से आ गये तो दिल को थोडी राहत मिल गई । फ़िर वही से दुसरे स्टेशन जाना था लेकीन इस किस्से के बाद फ़िर दुबारा दूसरें स्टेशन पर ट्रेन में जाने की हिमत नहीं हुइ इसिलिए वहा

से पैदल ही जाना उचित ही समजा लेकिन वहाँ से लोकमान्य तिलक टर्मिनसबहुत दूर था पहले ही ट्रेन में थके हारे थे फ़िर इतनी दूर सामान के साथ चलकर बुरी तरह से थक गये थे बस कही पर पीट टिकना चाहते थे। लेकिन जहा हम रुके थे वहा पहले से ही लोग सोये हुवे थे तो हम थोड़ी सी जगह बनाकर बैठ गयेलेकीन किसी को भी वह जगह पसंद नहीं थी। तो हम एल.एल.टि के मुख्य स्टेशन पर गये।लेकिन वहाँ पर इससे बुरा हाल हो गया वहा पर पुलिस लोगों का सामान चोरी ना हो इसलिए किसी को भी सोने नहीं देते थे सोये हुए लोगों को दन्डे मारकर उठाते थे। एक तो पहले से थक गये थे ऊपर से रात की नींद नहीं ऊपर से कड़कड़ाती ठंड ।लग रहा था की बस घर लौट आए । लेकिन वहा पर एक लड़की थी जिसनें हमारी नींदे उड़ा दी। वह मानसिक रूप से स्वस्थ नही थी । मन को लगता था वैस वह बर्ताव किया करती।मैने उसके बारे में जाना की वह आयु से तो बड़ी हो गयी थी लेकिन अकल से बहुत छोटी रह गयी । हम जहा बैठे थे वहा पर एक छोटा सा बच्चा अपनी माँ की गोद में सो रहा था । वही पर उसके खिलौने थे । वह एक बार उस बच्चे को उठाने के लिये झपट पड़ी । पर उसकी माँ के डाटने के बाद में उस बच्चे के खिलौनों के साथ खेलने लगी। फ़िर उसके बाद जब उस बच्चे के माँ ने उसे डाटा तो वह वहा से चली गई ।लेकिन फ़िर वह थोड़ी देर बाद फ़िर लौट आयी । अब वह सीधे जहा हम बैठे थे वहापर आयी आकर हमारे बैंच पर बैठी और एक टक अक्षता को ही देखने लगी मै वहा से उठकर दुसरी जगह जा बैठी । तब पता चला की वह जितनी पागल दिखती हैं वह इतनी पागल है नहीं । वह अक्षता को अपनी फ़ोटो खीचने के लिए कह रही थी जब उसने नहीं खिचिं तो वह उससे उसका फोन माँगने लगी ।वह उसे देखकर मुस्कुराती या एक टक देखती रहती । जैसे उसका अक्षता के साथ बहुत पुराना रिश्ता है। हम सब उससे डरे हुवे थे । वह बाद में सर को देखकर भी मुस्कुराने लगी सर के साथ बाते करने लगी । कितने देर तक वह हमारे साथ थी फ़िर अचानक उठकर कही चली गयी । लेकिन पता नहीं वह कैसे अपना गुजारा करती होगी।और हाँ इस यात्रा की यह लड़की हमेशा याद रहेगी ।

रात तो कैसी कैसी काट ली बस इंतजार था की कब कामायनी एक्सप्रेस्स ट्रेन आजाये और हम बैठ जाये।

दूसरा दिन

8 फरवरी 2020

ट्रेन के लिए हम 12 बजे स्टेशन से निकले और12:30 ट्रेन में सभी सामान रखकर खाना खाकर हम सब सो गए और शाम को उठ गये कुछ लोग अजीब अजीब तरह से देख रहे थे किसि ने तो हमें पर्दा बंधने का सुझाव दिया ।और हमनें वैसा ही किया।ट्रेन में जो उत्साह पहले था वह धीमा पड़ चुका था ।बेजानों से ट्रेन में पड़े पड़े पूरी रात काट ली ।

9 फरवरी

सुबह उठकर चाय नाश्ता किया स्टेशन वाली जलेभी का आनंद उठाया ।पुरा दिन गप्पबाजी और सो-सो करके निकाला।

जैसे जैसे बनारस पहुँचने लगे तो सब की सोई हुई आत्मा जागने लगी थी ।स्टेशन के एक घंटे पहले से ही हम अपना सामान उठाकर एक कतार बनाकर ट्रेन के दरवाजे के पास खड़े हो गए ।सभी ने ट्रेन से उतरकर एक दुसरे कासामान उतारने में मदद की।

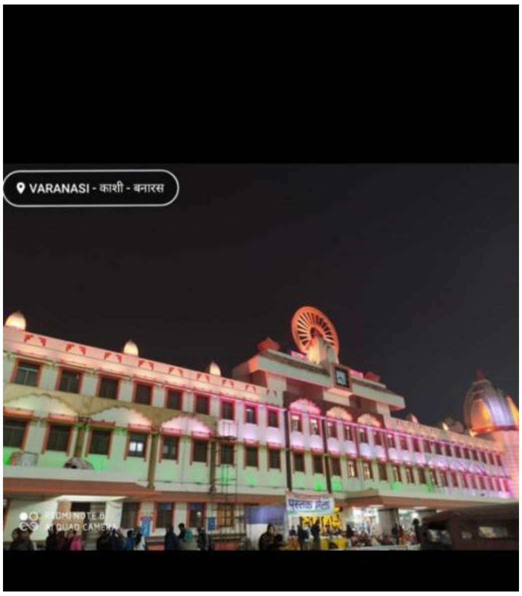

वहा से समान उठाकर टैक्सी में सवार होकर हॉटल पेराडायस के लिए रवाना हो गए ।

हॉटल तक गाडी नहीं जाती थी इसलिए हमें रास्ते पर ही उतारा तो फ़िर से इस सामान के साथ चलना पड़ेगा यह टेंशन था लेकिन जब हॉटल वालों ने कहा कि वे सामान कमरे तक पहूंचा देंगे तो बड़ी राहत मिली । जब हम चलकर हॉटल पहुंचे तो हॉटल देखकर बहुत खुशी हुई कि सारी तखावट ही गायब हो गई ।हमें एक कमरे में 3 जनो को रखा गया था । हॉटल के कमरे के अन्दर जाकर पहले बाथरुम कैसा है वह देखा और गीजर को चालू किया ।उस दिन हमनें हॉटल वालों से कहकर खाने का इन्तजाम कीया । और खाना रूम में ही पहुचाने के लिए कहा ।हम तिनों ने बैग को अपनी जगह रखा और एक एक कर सबनहाकर आये और बाद में दूसरों के कमरे देखने गये ।उनसे बातचीत की तबी हमारे कमरे में खाना आ गया । फ़िर हम खाना खाकर सोने की तैयारी कर रहा है ताकी कल सुबह जल्दि उठकर बनारस हिन्दु विश्वविद्यालय जाना था और कल कापुरा दिन उसी विश्वविद्यालय में बिताना था ।

10 फरवरी 2020

सुबह 7 बजे उठे। हाथ मुह धोकर बी एच.यु. जाने के लिए तैयार हुये । बादमें हमें चाय नाश्ता मिला शोले भटूरे खाकर मजा आ गया ।
सुबह के लगभग दस बजे हमने बनारस हिन्दू यूनिवर्सिटी की परिसीमा में प्रवेश किया।अब हम बनारस की शान कहे जाने वाले कैम्पस में थे और यहाँ का मुख्य भवन अंग्रेज़ी शाशन में अंग्रेज़ो द्वारा बनवाया गया था। इसी भवन से रानी विक्टोरिया अपना शासन चलाया करती थी।

बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय (आम तौर पर बी.एच.यू.) वाराणसी में स्थित एक केन्द्रीय विश्वविद्यालय है। इस विश्वविद्यालय की स्थापना महामना पंडित मदन मोहन मालवीय द्वारा सन् १९१६ में वसंत पंचमी के पुनीत दिवस पर की गई थी। इस विश्वविद्यालय के मूल में डॉ॰ एनी बेसेन्ट द्वारा स्थापित और संचालित सेन्ट्रल हिन्दू कॉलेज की प्रमुख भूमिका थी। विश्वविद्यालय को "राष्ट्रीय महत्त्व का संस्थान" का दर्ज़ा प्राप्त है। इस विश्वविद्यालय के दो परिसर है। मुख्य परिसर (१३०० एकड़) वाराणसी में स्थित है जिसकी भूमि काशी नरेश ने दान की थी।

मुख्य परिसर में ६ संस्थान्, १४ संकाय और लगभग १४० विभाग है। विश्वविद्यालय का दूसरा परिसर मिर्जापुर जनपद में बरकछा नामक जगह (२७०० एकड़) पर स्थित है। ७५ छात्रावासों के साथ यह एशिया का सबसे बड़ा रिहायशी विश्वविद्यालय है |जिसमे ३०,००० से ज्यादा छात्र अध्यनरत हैं, जिनमे लगभग ३४ देशों से आये हुए छात्र भी शामिल हैं। इसके प्रांगण में विश्वनाथ का एक विशाल मंदिर भी है। श्री सुंदरलाल, पं. मदनमोहन मालवीय, डॉ. एस. राधाकृष्णन् (भूतपूर्व राष्ट्रपति), डॉ. त्रिगुण सेन (भूतपूर्व केंद्रीय शिक्षामंत्री) जैसे मूर्धन्य विद्वान यहाँ के कुलपति रह चुके हैं।

एक डिपार्टमेंट से दूसरा डिपार्टमेंट, अंदाजित २ से ३ KM की दुरी पर आया हुआ हैं। हॉस्टल से शताब्दी भवन आने जाने में, पहले दिन ही हमने कम से कम १५ KM की पैदल यात्रा की।

बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय का इतिहास -

पंडित मदनमोहन मालवीय ने काशी हिंदू विश्वविद्यालय की स्थापना का श्रीगणेश 1904 ई. में किया, जब काशीनरेश महाराज प्रभुनारायण सिंह की अध्यक्षता में संस्थापकों की प्रथम बैठक हुई। 1905 ई. में विश्वविद्यालय का प्रथम पाठ्यक्रम प्रकाशित हुआ। जनवरी, 1906 ई. में कुंभ मेले में मालवीय जी ने त्रिवेणी संगम पर भारत भर से आयी जनता के बीच अपने संकल्प को दोहराया।

तत्कालीन शिक्षामंत्री 'सर हारकोर्ट बटलर' के प्रयास से 1915 ई. में केंद्रीय विधानसभा से 'हिन्दू यूनिवर्सिटी ऐक्ट' पारित हुआ, जिसे तत्कालीन गवर्नर जनरल 'लॉर्ड हार्डिंज' ने तुरंत स्वीकृति प्रदान कर दी। 4 जनवरी, 1916 ई. वसंत पंचमी के दिन समारोह वाराणसी में गंगा तट के पश्चिम, रामनगर के समानांतर महाराज 'प्रभुनारायण सिंह' द्वारा प्रदत्त भूमि मेंकाशी हिन्दू विश्वविद्यालय का शिलान्यास हुआ। उक्त समारोह में देश के अनेक गवर्नरों, राजे-रजवाड़ों तथा सामंतों ने गवर्नर जनरल एवं वाइसराय का स्वागत और मालवीय जी से सहयोग करने के लिए हिस्सा लिया। अनेक शिक्षाविद, वैज्ञानिक एवं समाजसेवी भी इस अवसर पर उपस्थित थे।

डा. बेसेंट द्वारा समर्पित 'सेंट्रल हिन्दू कॉलेज' में काशी हिन्दू विश्वविद्यालय का विधिवत शिक्षणकार्य, 1 अक्टूबर, 1917 से आरंभ हुआ। 1916 ई. में आई बाढ़ के कारण स्थापना स्थल से हटकर कुछ पश्चिम में 1,300 एकड़ भूमि में निर्मित वर्तमान विश्वविद्यालय में सबसे पहले इंजीनियरिंग कॉलेज का निर्माण हुआ और फिर आर्ट्स कॉलेज, साइंस कॉलेज आदि का निर्माण हुआ। 1921 ई से विश्वविद्यालय की पूरी पढ़ाई 'कमच्छा कॉलेज' से स्थानांतरित होकर नए भवनों में होने लगी। इसका उद्घाटन 13 दिसंबर, 1921 को 'प्रिंस ऑफ वेल्स' ने किया था।[1] पंडित मदनमोहन मालवीय ने 101 साल पहले 1916 में काशी हिन्दू विश्वविद्यालय की स्थापना की थी। तब इसका कुल मिलाकर एक ही कॉलेज था-सेंट्रल हिन्दू कॉलेज और आज यह विश्वविद्यालय 15 वर्ग किलोमीटर के क्षेत्रफल में फैला हुआ है। जिसमें 100 से भी अधिक विभाग हैं। इसे एशिया का सबसे बड़ा आवासीय विश्वविद्यालय होने का गौरव हासिल है। महामना पंडित मालवीय के साथ ही सर्वपल्ली राधाकृष्णन और एनी बेसेंट ने भी विश्वविद्यालय की स्थापना में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई और लंबे समय तक विश्वविद्यालय से जुड़े रहे।

विश्वविद्यालय परिसर -

परिसर के भीतर विशालकाय भवन हैं, जिनमें कक्षाएँ चलती हैं। विज्ञान, कला, सामाजिक विज्ञान, इंजीनियरिंग, मेडिकल, फाइन आर्ट्स, संगीत, संस्कृत शोध विभाग आदि के लिए अलग-अलग इमारतें हैं। विश्वविद्यालय के पास निजी संचार प्रणाली, प्रेस, कंप्यूटर नेटवर्क, डेयरी, कृषि फार्म, कला व संस्कृति संग्रहालय और विशालकाय सेंट्रल लाइब्रेरी हैं। लाइब्रेरी में 10 लाख से भी अधिक पुस्तकें, पत्रिकाएँ, शोध रिपोर्ट और ग्रंथ आदि हैं। विश्वविद्यालय का अपना हेलीपैड भी और अपनी अलग सुरक्षा व्यवस्था भी है। विश्वविद्यालय से एमबीए की डिग्री भी हासिल की जा सकती है।

इसके प्रांगण में विश्वनाथ का एक विशाल मंदिर भी है। विशाल सर सुंदरलाल चिकित्सालय, गोशाला, प्रेस, बुकडिपो एवं प्रकाशन, टाउन कमेटी (स्वास्थ्य), पी.डब्ल्यू.डी., स्टेट बैंक की शाखा, पर्वतारोहण केंद्र, एन.सी.सी. प्रशिक्षण केंद्र,

“हिन्दू यूनिवर्सिटी” नामक डाकखाना एवं सेवायोजन कार्यालय भी विश्वविद्यालय तथा जनसामान्य की सुविधा के लिए इसमें संचालित हैं। इस विश्वविद्यालय के दो परिसर है। मुख्य परिसर (1300 एकड़) वाराणसी में स्थित है। मुख्य परिसर में 3 संस्थान, 14 संकाय और 124 विभाग है। विश्वविद्यालय का दूसरा परिसर मिर्जापुर जनपद में बरकछा नामक जगह (2700 एकड़) पर स्थित है।

परिसर के भीतर 14 अलग-अलग संकाय हैं। इनमें एक महिला कॉलेज, इंस्टीट्यूट ऑफ़ टेक्नोलॉजी, इंस्टीट्यूट ऑफ़ मेडिकल साइंसेस, कृषि संकाय भी शामिल हैं। विश्वविद्यालय में छह विषयों के एडवांस्ड स्टडी सेंटर भी हैं। ये विषय हैं बॉटरी, जुलोजी, मेटलर्जी, इलेक्ट्रॉनिक्स, भौतिकी और माइनिंग। विश्वविद्यालय में 49 छात्रावास हैं, जिनमें से 35 लड़कों के लिए और 14 लड़कियों के लिए हैं। कई नए छात्रावास भी निर्माणाधीन अवस्था में हैं। यहाँ के इंस्टीट्यूट ऑफ़ टेक्नोलॉजी की तुलना आईआईटी से की जाती है। प्रवेश भी आईआईटी की परीक्षा में प्रदर्शन के आधार पर होता है।

हिंदी विभाग

हमारा स्वागत हिंदी विभाग में वहाँ के एक शिक्षक ने किया उनका सम्बंध गोवा विश्वविद्यालय के साथ कैसे जुडा है यह बताया।और बादमें हमें प्रेमचंद जी की ईदगाह कहानी सुनाई साधारण से चीमटे कीकहानी में सुंदरता का सम्बंध अपनी संवेदना से जुड़ा होताहै । प्रेमचंद पर गांधी का प्रभाव देखा जा सकता है ।और कबीर का रहस्यवाद पर अधारित एक दोहे पर चर्चा की।उनको सुनते वक्त ऐसे

लग रहा था जैसे उनको सुनते ही रहूँ ।उन्होने भविष्य में फ़िर से गोवा आकर मिलने की कामना की बहुत दिनों बाद किसी को सुनकर बहुत अच्छा लगा । वह अपने काम में व्यस्त होने के कारण हमारे साथ ज्यादा बातेनहीं कर पाये वहाँ की फ़ीस और उनकों देखकर लगा की आगे की पढ़ाई यहाँ से ही पुरी करू । वहाँ से हम उनके विभाग की लाइब्रेरी में गये ।वहापर एकदम शन्ति थी हर एक किताब विषय के अनुसार रखी थी इससे पाठक को सुविधा मिलती है की अपनी रुचि के हिसाब से किताब ढूँढ सके ।

बी.एच.यु का विश्वनाथ मंदिर

विश्वनाथ मंदिर की स्थापना पंडित मदन मोहन मालवीय ने की थी, पंडित जी ने ही बनारस हिंदू विश्वविद्यालय को स्थापित किया था। यह मंदिर भगवान शिव को समर्पित है। 252 फीट ऊंचे इस श्राइन की नींव मार्च, 1931 में रखी गई थी और इसे पूरा होने में लगभग तीन दशक लग गए थे।
यह पूरा मंदिर सफेद संगमरमर से बना हुआ है जो हु-ब-हु असली विश्वनाथ मंदिर की कॉपी है। असली विश्वनाथ मंदिर भी काशी में ही स्थित है, परिसर में सात मंदिर है जिनमें कई देवी - देवताओं की मूर्तियां स्थापित की गई है।
मंदिर के ग्राउंड फ्लोर में भगवान शिव को समर्पित मंदिर है जबकि पहले फ्लोर में लक्ष्मी नारायण और दुर्गा मां का मंदिर है। इस मंदिर की अनूठी विशेषता, सफेद संगमरमर से बना लंबा शिखर है। मंदिर के गर्भगृह में एक शिवलिंग है। मंदिर की भीतरी दीवारों में गीता और अन्य महत्वपूर्ण धर्मग्रन्थों के श्लोक व विचार उत्कीर्ण किए गए है।
यह मंदिर सभी धर्म और जातियों के लिए खुला है, इस मंदिर में पंडित मदन मोहन मालवीय जी का उदारवादी और प्रगतिशील दृष्टिकोण देखने को मिलता है। मंदिर में एकदम शांत वातावरण था । शिवलिंग को छूकर दर्शन करने के भाग्य हमें मिला वह भी सोमवार के दिन । मंदिर का प्रागण बहुत बडा है वहा पर ही हमने कुच तस्वीरे खिंची ।मंदिर के बाहर ही हमनें कोल्ड कोफ्फी पी ली ।वहाँ से हम पुस्तक प्रदर्शनी में गये वहा पर अपने अपने मर्जी किताबें ढूँढने में हमनें बहुत देर कर दि की हमें गंगा आरती ही छुट गई ।

अस्सी घाट

किताबें खरीदने में इतनें व्यस्त थे की समय का भान न रहा इसलिए हम अस्सी घाट देर से पहुँचे ।इसलिये हम आरती न देख सके इसलिये हम वहा के राधे कृष्ण के मंदिर और अस्सी घाट पर ढेर सारे फ़ोटो खिच्कर खाना खाने के लिए दि विलेजरस नामक हॉटल में गये।

11 फरवरी 2020

सारनाथ

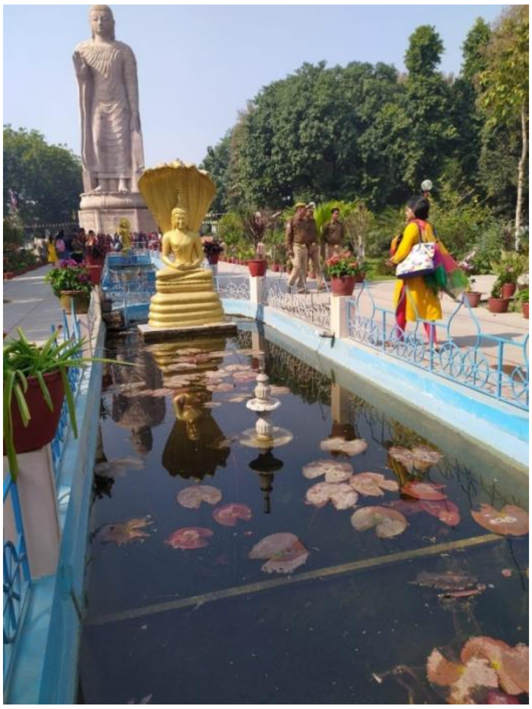हम सुबह उठकर टैक्सी में सवार होकर सारनाथ के लिए रवाना हो गये ।जब हम सारनाथ पहुचें वहाँपर बुद्ध कीविशालप्रतिमा देख दंग रह गए ।

परिचय

पहले यहाँ घना वन था और मृग-विहार किया करते थे। उस समय इसका नाम 'ऋषिपत्तन' और 'मृगदाय' था। ज्ञान प्राप्त करने के बाद गौतम बुद्ध ने अपना प्रथम उपदेश यहीं पर दिया था। सम्राट अशोक के समय में यहाँ बहुत से निर्माण-कार्य हुए। सिंहों की मूर्ति वाला भारत का राजचिह्न सारनाथ के अशोक के स्तंभ के शीर्ष से ही लिया गया है। यहाँ का 'धमेक स्तूप' सारनाथ की प्राचीनता का आज भी बोध कराता है। विदेशी आक्रमणों और परस्पर की धार्मिक खींचातानी के कारण आगे चलकर सारनाथ का महत्व कम हो गया था। मृगदाय में सारंगनाथ महादेव की मूर्ति की स्थापना हुई और स्थान का नाम सारनाथ पड़ गया।

प्राचीन नाम

इसका प्राचीन नाम ऋषिपतन (इसिपतन या मृगदाव) (हिरनों का जंगल) था। ऋषिपतन से तात्पर्य ‘ऋषि का पतन’ से है जिसका आशय है वह स्थान जहाँ किसी एक बुद्ध ने गौतम बुद्ध भावी संबोधि को जानकर निर्वाण प्राप्त किया था मृगों के विचरण करने वाले स्थान के आधार पर इसका नाम मृगदाव पड़ा, जिसका वर्णन निग्रोधमृग जातक में भी आया है।आधुनिक नाम ‘सारनाथ’ की

उत्पत्ति 'सारंगनाथ' (मृगों के नाथ) अर्थात् गौतम बुद्ध से हुई। जिसका संबंध बोधिसत्व की एक कथा से भी जोड़ा जाता है। वोधिसत्व ने अपने किसी पूर्वजन्म में, जब वे मृगदाव में मृगों के राजा थे, अपने प्राणों की बलि देकर एक गर्भवती हरिणी की जान बचाई थी। इसी कारण इस वन को सारंग (मृग)-नाथ या सार-नाथ कहने लगे। दयाराम साहनी के अनुसार शिव को भी पौराणिक साहित्य में सारंगनाथ कहा गया है और महादेव शिव की नगरी काशी की समीपता के कारण यह स्थान शिवोपासना की भी स्थली बन गया। इस तथ्य की पुष्टि सारनाथ में, सारनाथ नामक शिवमंदिर की वर्तमानता से होती है।

इतिहास

बुद्ध के प्रथम उपदेश (लगभग 533 ई.पू.) से 300 वर्ष बाद तक का सारनाथ का इतिहास अज्ञात है: क्योंकि उत्खनन से इस काल का कोई भी अवशेष नहीं प्राप्त हुआ है। सारनाथ की समृद्धि और बौद्ध धर्म का विकास सर्वप्रथम अशोक के शासनकाल में दृष्टिगत होता है। उसने सारनाथ में धर्मराजिका स्तूप, धमेख स्तूप एवं सिंह स्तंभ का निर्माण करवाया। अशोक के उत्तराधिकारियों के शासन-काल में पुन: सारनाथ अवनति की ओर अग्रसर होने लगा। ई.पू. दूसरी शती में शुंग राज्य की स्थापना हुई, लेकिन सारनाथ से इस काल का कोई लेख नहीं मिला। प्रथम शताब्दी ई. के लगभग उत्तर भारत के कुषाण राज्य की स्थापना के साथ ही एक बार पुन: बौद्ध धर्म की उन्नति हुई। कनिष्क के राज्यकाल के तीसरे वर्ष में भिक्षु बल ने यहाँ एक बोधिसत्व प्रतिमा की स्थापना की। कनिष्क ने अपने शासन-काल में न केवल सारनाथ में वरन् भारत के विभिन्न भागों में बहुत-से विहारों एवं स्तूपों का निर्माण करवाया। एक स्थानीय किंवदंती के अनुसार बौद्ध धर्म के प्रचार के पूर्व सारनाथ शिवोपासना का केंद्र था। किंतु, जैसे गया आदि और भी कई स्थानों के इतिहास से प्रमाणित होता है बात इसकी उल्टी भी हो सकती है, अर्थात बौद्ध धर्म के पतन के पश्चात ही शिव की उपासना यहाँ प्रचलित हुई हो।

अशोक स्तंभ

मुख्य मंदिर से पश्चिम की ओर एक अशोककालीन प्रस्तर-स्तंभ है जिसकी ऊँचाई प्रारंभ में 17.55 मी. थी। वर्तमान समय में इसकी ऊँचाई केवल 2.03 मीटर है। स्तंभ का ऊपरी सिरा अब नींव में खुदाई करते समय यह पता चला कि इसकी स्थापना इंच आकार के बड़े पत्थर के चबूतरे पर हुई थी। इस स्तंभ पर तीन लेख उल्लिखित हैं। पहला लेख अशोक कालीन ब्राह्मी लिपि में है जिसमें सम्राट ने आदेश दिया है कि जो भिछु या भिक्षुणी संघ में फूट डालेंगे और संघ की निंदा करेंगे: उन्हें सफ़ेद कपड़े पहनाकर संघ के बाहर निकाल दिया जाएगा। दूसरा लेख कुषाण-काल का है। तीसरा लेख गुप्त काल का है, जिसमें सम्मितिय शाखा के आचार्यो का उल्लेख किया गया है।

बनारसि साड़ी फैक्ट्री

बनारसी साड़ी का मुख्य केंद्र बनारस है। बनारसी साड़ी मुबारकपुर, मऊ, खैराबाद में भी बनाई जाती हैं। यह माना जा सकता है कि यह वस्त्र कला भारत में मुगल बाद्शाहों के आगमन के साथ ही आई। पटका, शेरवानी, पगड़ी, साफा, दुपट्टे, बैड-शीट, मसन्द आदि के बनाने के लिए इस कला का प्रयोग किया जाता था। चूंकि भारत में साड़ियों का प्रचलन अधिक था इरान, इराक, बुखारा शरीफ आदि jai pubg से आए हथकरघा के कारीगरों द्वारा विभिन्न प्रकार के डिज़ाइनों को साड़ियों में डाला जाता था यथा बेल, बूटी, आंचल एवं कोनिया आदि। उस समय में रेशम एवं ज़री के धागों का प्रयोग किया जाता था। ताने में कतान और बाने में पाट बाना प्रयोग किए जाते थे जिस के परिणाम स्वरूप वस्त्र अति मुलायम व गफदार बनते थे। पूर्व में नक्शा, जाला से साड़ियाँ बनाई जाती थीं। उसके बाद डाबी तथा जेकार्ड का प्रयोग होने लगा जो कि परम्परा से हटकर माना जा सकता है और अब यह पावर-लूम के रूप में विकसित हुई मानी जा सकती है। बनारसी साड़ी बनाने वाले ज्यादातर कारीगर मुसलमान - अनसारी होते हैं। कवि कबीर भी बुनकर थे। इस साड़ी के खरीददार गुजराती, मारवाड़ी, राजपूत और जिम्मेदार घरानों के लोग होते हैं। प्राचीन समय से ही बनारसी साड़ियों का प्रयोग विशेषतौर से विवाह समारोहों में दुल्हन व नवविवाहिता स्त्रियों द्वारा प्रयोग किया जाता था और आज तक यह परम्परा चलती आ रही है।

लमही

कथा सम्राट मुंशी प्रेमचंद का गांव लमही महज एक गांव नहीं है, यहां कथा सम्राट की कहानियों का तिलिस्म भी है। ईदगाह के हामिद का चिमटा, गोदान का होरी और नमक का दरोगा का नायक...। सब लमही की उस लाइब्रेरी में अपनी शिद्दत के साथ मौजूद हैं। मुंशी प्रेमचंद के उपन्यासों जैसी ही है उनके गांव की कहानी। उपन्यास सम्राट की अमर कहानियों के बीच उनके बचपन की झलक दिखाता एक गिल्ली डंडा भी। सच ये है लमही की पहचान प्रेमचंद हैं और उनकी कहानियों का मर्म यहां की आब-ओ-हवा में घुला है। लमही गांव में मुंशी प्रेमचंद स्मारक स्थल पर प्रेमचंद स्मारक न्यास लमही की एक लाइब्रेरी है। मुंशीजी के उपन्यासों, कहानियों की यह लाइब्रेरी सिर्फ एक पुस्तकालय तक ही सीमित नहीं है। कोशिश है कि न केवल उनकी किताबों को पढ़ा जाए, बल्कि प्रेमचंद को समझा जाना जाए। बचपन में मुंशी प्रेमचंद अक्सर दोस्तों के साथ गिल्ली डंडा खेला करते थे। ये उनका पसंदीदा खेल था। इस लाइब्रेरी में मौजूद गिल्ली डंडा उनके बचपन के इसी पहलू को दिखाता है। इसी तरह यहां रखी पिचकारी भी उनके होली के त्योहार से जुड़े रहने का एहसास कराती है। भला ईदगाह कहानी के हामिद के चिमटे को कौन भूल सकता है। हामिद ने खिलौनों के बजाय इसे अपनी दादी के लिए खरीदा था।मानवीय संवेदना, पारिवारिक मूल्यों के उसी भाव को दर्शाता है यहां रखा चिमटा। यहां उपलब्ध किताबों की लंबी फेहरिस्त में वो 'जमाना' भी है, जिसे अंग्रेजों ने जला दिया और वो समर यात्रा भी इसे अंग्रेजों ने प्रतिबंधित कर दिया था। प्रेमचंद स्मारक न्यास लमही के

अध्यक्ष सुरेश चंद्र दुबे का कहना है कि इस गांव में अब भी कफन की बुधिया, बूढ़ी काकी और निर्मला जैसे किरदार हैं लेकिन अब उनके दर्द को लिखने वाला कोई नहीं।

लहरतारा

जब हम लहरतारा जाने के लिए निकले तो मन में बहुत उत्साह था की संत कबीर दास के गाँव जा रहे है। वे निर्गुणब्रम को मानने वालेथे तो लगा था की उनकी मुर्ति भी नहीं होगी उनकीं जुलाहा की बस्ती बार बार याद आ रही थी । जब हम पहुचें तो देखा की वहाँ कबीर का भव्य मंदिर था ।एक पल के लिए लगा था जो हमनें उनके बारें में इतने साल पढ़ा है वह झूठ था कि जो हम आंखो के सामने देख रहे थे वह। शायद कबीर भी सोचते होंगे कि जिसका मै ने जिवन भर विद्रोह कीया और आज इन लोगों ने मेरा ही मन्दिर बनवा दिया उसी मुर्ति पूजा का शिकार कीया और मेरे ही नाम पर पण्डित प्रसाद बाट रहें हैं। उनके जन्म सम्बंदीत लहरतारा तालाब देखने का अवसर मिला । उनकी चारपाई और उनके कपड़े जतन करके रखें है ।लेकिन उनके महल को देखकर सब निराश हो गए ।

कबीर

संत कबीर दास का नाम साहित्य जगत में विशेष स्थान रखता है। उनका सूफियाना अंदाज और रूढ़िवादियों के खिलाफ कट्टर रवैया उन्हें दूसरों से अलग बनाता है। वे एक मशहूर कवि व संत के रूप में प्रसिद्ध हुए।संत कबीर दास के जन्म की सटीक जानकारी किसी को नही है। कुछ विद्वानों के अनुसार उनका जन्म सन् 1398 में हुआ था। वहीं कुछ इतिहासकारों के मुताबित कबीर दास का जन्म सन् 1440 में हुआ था। कबीर दास के जन्म एवं जाति में भी विभिन्न मत है। शिक्षाविदों के अनुसार कबीर दास वाराणसी में एक ब्राह्मण के घर जन्में थे। जबकि बाद में उनकी परवरिश एक मुस्लिम परिवार में हुई। बताया जाता है कि संत कबीरदास को शिशु अवस्था में उनकी मां ने लोक लाज के डर से उन्हें छोड़ दिया था। क्योंकि कबीर की मां एक विधवा ब्राह्मणी थीं। कबीर की मां ने उन्हें एक तालाब के किनारे छोड़ा था। कबीर दास ने स्कूली शिक्षा भले ही कम ग्रहण की हो, लेकिन उनके विचार काफी प्रभावशाली थे। उन्होंने अपने व्यवहारिक ज्ञान के आधार पर कई कविताओं व लेखों की रचना की। उन्हें उस युग का महानायक भी कहा गया। संत कबीर दास का लालन-पालन भले ही मुस्लिम परिवार में हुआ, लेकिन उनकी प्रवृत्ति बचपन से ही साधुओं की थी। वे भक्ति में हमेशा डूबे रहते थे। वे हिंदू भक्ति गुरू रामानंद से काफी प्रभावित थे। कबीर दास स्वभाव से भले ही एक संत हो, लेकिन उन्होंने अपने सांसरिक दायित्वों से कभी मुंह नहीं मोडा। उन्होंने लोई नामक स्त्री से विवाह किया। जबकि उनके कमाल एवं कमाली नामक पुत्र-पुत्री भी हुए। संत कबीर दास एक सूफी की तरह लोगों को प्रेरण्दायी बातें बताते थे। वे निर्गुण ब्रहम के उपासक भी थे। उन्हें धर्म व जाति के नाम पर झूठे आडंबर बिल्कुल पसंद

नही थे। कबीरदास कहते हैं कि एक बूंद से सृष्टि रची है। तो फिर कौन ब्राह्मण और कौन शूद्र। उनके इस दर्शन से जाति, धर्म, वर्ग, भाषा, संप्रदाय की भिन्नता खत्म हुई। समाज के प्रति लोगों ने अपना दृष्टिकोण बदला। संत कबीर दास जातिगत भेद-भाव के साथ जीव हिंसा के भी खिलाफ थे। उनका मानना है कि दया, हिंसा और प्रेम का मार्ग एक है। ऐसे में किसी भी तरह की हिंसा का जन्म हिंसा ही होगी। कबीर दास ने समाज सुधार के लिए कई कविताएं व लेख लिखे हैं, इनमें सबसे प्रमुख बीजक ग्रंथ है। ये ग्रंथ तीन भागों, साखी, सबद व रमैनी में बंटा हुआ है। इसके अलावा उन्होंने गुरू-महिमा, ईश्वर महिमा, सतसंग महिमा व माया आदि दार्शनिक जीवनी लिखी है।

गंगा दर्शन

कल हमें आरती देखने को नही मिली थी इसलिए आज हम समय से पहले ही आकर तैयार हो गये थे ।हम सभी प्रसिध्द गंगा आरती देखने के लिए बहुत उत्सुक थे। जब पता चला कि हम आरती नाव में सवार होकर देखेंगे तो हमारी खुशी दुगनी हो गई ।हम एक एक कर नाव में चढ़े और नाव में जाकर बैठ गए ।पवित्र गंगा खुली हवा खुला आसमान हम जो अनुभव कर रहे थे वह शब्दों में कहना मुश्किल है । नाव का सफ़र शुरु हो गया ।नाव जैसे जैसे आगे बढ़ रही थी तो नावि घाट के बारे में बता रहा था और उससे जुड़ी कहानियाँ भी सुना रहा था । उसने हम पर गंगा जल भी शिडक दिया गंगा के उस पार नाव रोककर गंगा का दुसरा रुप देखने को मिला ।6 बजे हम अस्सी घाट के सामने हमारी नाव लगकार आरती में लिन हो गये लगा कि जिवन का सार्थक हो गया । वहाँ पर हमनें देखा की छोटे छोटे बच्चे दिया और बाती बेच रहे थे कहते की गंगा जी में दिया जलाने से आपकी मनोकामना पूरी हो जायेगी और भविक इनसे दिया बाती खरीदकर लगाते भी है।परन्तु प्राचीन काल में कोई नावि भटक गया हो तो अन्दरे में उसे राह दिखाने के लिये ये दिये जालाए जाते थे ।अब इसको आस्ता के साथ जोड़ा गया है ।

बनारस मेरे सपनों का शहर ।

बनारस मुख्य रुप से धार्मिक क्रिया-कलापों की वजह से जाना जाता है।जब से मैंने बनारस कविता पढ़ी थी तब से सोच रही थी की बनारस के घाट कैसे होते होगें वहा पर ही मरने या अंतिम संस्कार करने पर मोक्ष की प्राप्ति कैसे होती होगी किस तरह पंडित सामान्य लोगों को ठग्ते होगें बिकरियो की कटोरे कैसेभर जाते होगें येसे तमाम सवालों के जवाब मुझें सव्यं् बनारस जाकर ही मिल सकते थे ।बनारस की प्रचलित महाआरती को केवल टीवी पर ही देखा था और इसको खुद अनुभव ने का मौकाआज भ्रमण द्वारा पुरा हुवा है।

काशी नगरी जीसे देवों की नगरी भी कहा जाता है। वर्तमान वाराणसीशहर में स्थित पौराणिक नगरी है। इसे संसार के सबसे पुरानी नगरों में माना जाता है। भारत की यह जगत्प्रसिद्ध प्राचीन नगरी गंगा के वाम (उत्तर) तट पर उत्तर प्रदेश के दक्षिण-पूर्वी कोने में वरुणा और असी नदियों के गंगासंगमों के बीच बसी हुई है। इस स्थान पर गंगा ने प्राय: चार मील का दक्षिण से उत्तर की ओर घुमाव लिया है और इसी घुमाव के ऊपर इस नगरी की स्थिति है। इस नगर का प्राचीन 'वाराणसी' नाम लोकोच्चारण से 'बनारस' हो गया था जिसे उत्तर प्रदेश सरकार ने शासकीय रूप से पूर्ववत् 'वाराणसी' कर दिया है।

गंगा दर्शन

गंगा के प्रदूषण के बारे में जितना सुना था और वहां की क्रिया-कलापों के कारण जितनी दूषित थी जैसा मेने सोचा था उससे साफ़ सुतरि गंगा हमें देखने

मिली जब अवसर मिला तो नाव में सवार होकर हम गंगा स्तिथ घाटों के दर्शन लिये। वाराणसी में घाट नदी के किनारे स्तिथ हैं जो गंगा नदी के किनारे जाते हैं। शहर में 88 घाट हैं। अधिकांश घाट स्नान और पूजा समारोह घाट हैं, जबकि दो घाटों का उपयोग विशेष रूप से श्मशान स्थलों के रूप में किया जाता हैं। 1700 ईस्वी के बाद अधिकांश वाराणसी घाटों का पुनर्निर्माण किया गया था, जब शहर मराठा साम्राज्य का हिस्सा था। वर्तमान घाट के संरक्षक मराठ,शिंदे, होल्कर, भोंसले, और पेशवे (पेशव) थे। कई घाट किंवदंतियों या पौराणिक कथाओं से जुड़े होते हैं जबकि कई घाट निजी तौर पर स्वामित्व में होते हैं।घाटों में गंगा पर श्याम की नाव की सवारी एक लोकप्रिय आगंतुक आकर्षण है। और इस पल मै उस आनंद का स्वयं अनुभव ले रही थी । पौराणिक स्रोतों के अनुसार, नदी के तट पर पाँच प्रमुख घाट हैं, जो कि *काशी* के पवित्र शहर: अस्सी घाट, दशाश्वमेध घाट, मणिकर्णिका घाट, पंचगंगा घाट और आदि केशव घाट की एक खासियत के साथ जुड़े होने के कारण महत्वपूर्ण हैं।

अस्सी घाट

यह घाट जो सूखी नदी *असी के* साथ गंगा के संगम पर स्थित था, शहर की पारंपरिक दक्षिणी सीमा को चिह्नित करता है।अस्सी घाट नाम दिया गया है क्योंकि यह 80 वां घाट है। इसका नामकरण असी नामक प्राचीन नदी (अब अस्सी नाला) के गंगा के साथ संगम के स्थल होने के कारण हुआ है।

पौराणिक कथा है की युद्ध में विजय प्राप्त करने के बाद दुर्गा माता ने दुर्गाकुंड के तट पर विश्राम किया था ओर यहीं अपनी असि (तलवार) छोड़ दी थी जिस के गिरने से असी नदी उत्पन्न हुई | असी और गंगा का संगम विशेष रूप से पवित्र माना जाता है |यहाँ प्राचिन काशी खंडोक्त संगमेश्वर महादेव का मंदिर है ।अस्सी घाट काशी के पांच तीर्थों में से यह एक है ।

दशाश्वमेघ घाट

यहीं ब्रह्मा ने दशाश्वमेघ यज्ञों का अनुष्ठान किया था | कहा जाता है की काशी के सुप्रसिद्ध देवदास ने इस स्थान से देवतायों को खदेड़ दिया | तब महादेव ओर पार्वती दोनों ने मंदराचल का आश्रय लिया | देवदास को पराजय करने के लिए उन्होंने ब्रह्मा को बुलाया ओर आपस में परामर्श किया ओर उपाय सोचा | यह विचार कर की देवकार्य की त्रुटी होने से देवदास को अपराधी होना पड़ेगा, ब्रह्मा हंस पर चढकर काशीधाम पहुंचे ओर इस घाट पर आसन लगा देवदास से दश अश्वमेघ यज्ञों की सामग्री माँगने लगे | देवदास ने सब सामग्री भेज दी | तब उसकी कोई त्रुटी न देख ब्रह्मा ने इस घाट में उन यज्ञों को पूर्ण किया | तब से इस घाट को असाधारण पवित्रता प्राप्त हुई |

यह उपाय करने पर भी ब्रह्मा देवदास को परास्त करने में विफल मनोरथ हुए ओर बहुत लजाए, इसी लिए महादेव के पास नहीं लौटे किन्तु प्रसन्न चित्त हो काशी में रहने लगे |

इस घाट के ऊपर दशाश्वमेघ तथा ब्रह्मेश्वर का मंदिर है |

मणिकर्णिका घाट

शिव जी का मणि और पार्वती जी कान की कर्निका वहा गिर गई थी और उसे भगवान शिव जी खोज रहे थे थे खोजते खोजते रात हो गई थी। देवों के देव होकर भी मणि और कर्निका ढूंड न पाने पर माता पार्वती शिवजी पर हसी थी तब शिव जीने श्राप दिया था की वहा अखंड अग्नि जलती रहेगी ।

दूसरी कथा के अनुसार भगवान शिव को अपने भक्तों से छुट्टी ही नहीं मिल पाती थी। देवी पार्वती इससे परेशान हुईं और शिवजी को रोके रखने हेतु अपने कान की मणिकर्णिका वहीं छुपा दी और शिवजी से उसे ढूंढने को कहा। शिवजी उसे ढूंढ नहीं पाये और आज तक जिसकी भी अन्त्येष्टि उस घाट पर की जाती है, वे उससे पूछते हैं कि क्या उसने देखी है?इस घाट की विशेषता ये हैं, कि यहां लगातार हिन्दू अन्त्येष्टि होती रहती हैं व घाट पर चिता की अग्नि लगातार जलती ही रहती है, कभी भी बुझने नहीं पाती। इसी कारण इसको महाश्मशान नाम से भी जाना जाता है। एक चिता की अग्नि समाप्त होने तक दूसरी चिता में आग लगा ही दी जाती है,24 घंटे ऐसा ही चलता है।वैसे तो लोग श्मसान घाट में जाना नही चाहते, पर यहाँ देश विदेश से लोग इस घाट का दर्शन भी करने आते है।इस घाट पर ये एहसास होता है कि जीवन का अंतिम सत्य यही है।

पंचगंगा घाट,

कोल्हापुर के उत्तर-पश्चिम में पंचगंगा नदी पर निर्मित प्रसिद्ध घाट है। इस घाट के आस-पास कई छोटे बड़े मन्दिर हैं जिसमें से कुछ नदी के बीच भी स्थित हैं। पंचघंगा घाट पूरी तरह से पत्थरों से निर्मित है। यह बहुत बड़ा है और प्राकृतिक सौन्दर्य से भरपूर है।

यहीं पर सन्त एकनाथजी ने वारकरी सम्प्रदाय का महान ग्रन्थ श्रीएकनाथी भागवत लिखकर पूरा किया और काशिनरेश तथा विद्वतजनों द्वारा उस ग्रन्थ की हाथी पर शोभायात्रा बड़ी धूमधामसे निकाली गयी।

तुलसी घाट का पुराना नाम "लोलार्क घाट" था।यहाँ भगवान सूर्य का मंदिर है,जहाँ संतान प्राप्ति हेतु महिलायें लोलार्क कुंड में स्नान करती है ।संत तुलसी दास जी के नाम पर सोलहवीं सदी इसका नाम बदल दिया। संत तुलसी दास जी द्वारा इस घाट पर श्रीकृष्ण लीला का आरम्भ किया गया।संत तुलसी दास जी द्वारा राम चरित मानस के कुछ अंश की रचना यहाँ की गयी थी । और यही पर संत तुलसी दास जी का निर्वाण हुआ था ।

मैने सोचा था की शायद वहा पहाड पर या जगल में मृतो को जलाते होंगे लेकिन जब देखा की गंगा किनारे ही चिताग्नि देते हैं तो में दंग रह गई । नावि ने बताया कि जिसकी लाश 12 बजे के बाद जलायी जाती है उसकी राख विश्वनाथ मंदिर में अभिषेक के लिये भेजी जाती है। गंगा का दुसरा छोर गंगा के दुसरे रुप का प्रतिक है जैसे एक ओर क्रिया-कलापों और लोगों से गजागज भरा हुवा तो दुसरी तरफ शांत दूर तक फ़ैली हुई रेत।अब लोगों ने वहा पर व्यापर शुरु कर दिया है।जैसे मनोरंजन हेतू घुड़सवारी उंट सवारी आदी होती हैं ।हमारी नाव भी उस तरफ 10 मिनट के लिए रुकि थी ।लेकिन हमनें नाव में बैठकर ढलते सूरज के साथ गंगा के शीतल पवित्र हवा का आनंद उठाना उचित समझा ।जैसे ही आरती का समय हुवा तो हम अस्सी घाट के किनारे आकर प्रसिद्ध बनारस की महा आरती का आनंद उठाया जीसे देखने की बहुत इच्छा थी वह आज पूरी हो गयी ।

12 फरवरी 2020

विश्वनाथ मंदिर

उस दिन हम सुबह 4:30 बजे उठे और साडी पहनकर हॉटल से 7 बजे बिना नाश्ता किये ही निकल गये लेकिन टैक्सी वाले आये ही नहीं 8 बजे भी उनका कुच आता पता नही था फ़िर जब वह आये तो एक गाडी कम थी उस गाडी का इंतजार किये बिना किसी तरह ऐडजस्ट करके मंदिर चले गये । मंदिर के बाहर एक दुकान थी वही पर हमने हमारा सामान रखवा दिया ।और मंदिर में दर्शन करने के लिये चले गये । वहाँ पर सबको चेक करके एक कतार में अन्दर भेज रहे थे अन्दर जाकर बाबा विश्वनाथ के दर्शन करके आगे बढ़ ही रही थी की एक माला आकर गले में गिर गई 1पल के लिए मेरी जान ही हतेली में आ गई फ़िर वहा के किसिने बताया कि येसा होना शुभ होता है। फ़िर वहा से हम अन्नपूर्णा माता के मंदिर गये ।सुबह का नाश्ता नहीं किया था तो भूक भी लगी थी इसलिये माता अन्नपूर्णा का प्रसाद यानी खाना सुबह10 बजे खा लिया ।

शिव की नगरी काशी में महादेव साक्षात वास करते हैं. यहां बाबा विश्वनाथ के दो मंदिर बेहद खास हैं. विश्वनाथ मंदिर जो 12 ज्योतिर्लिंगों में नौवां स्थान रखता है,

काशी नगरी पतित पावनी गंगा के तट पर बसी. यह भी कहा जाता है कि काशी नगरी देवादिदेव महादेव की त्रिशूल पर बसी है. धर्मग्रन्थों और पुराणों में जिसे मोक्ष की नगरी कहा गया है जो अनंतकाल से बाबा विश्वनाथ के भक्तों के

जयकारों से गूंजती आयी है, शिव भक्तों की वो मंजिल है जो सदियों से यहां मोक्ष की तलाश में आते रहे हैं.

काशी की इस यात्रा पर हम आपको महादेव के दो ऐसे रूपों के दर्शन कराएंगे, जिन्हें बाबा विश्वनाथ के नाम से पुकारा जाता है. आप सोच रहे होंगे कि एक ही नगरी में भोले के दो रूप वो भी एक ही नाम से कैसे? वाराणसी के काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में विराजमान बाबा विश्वनाथ की महिमा और उनके महत्व के बारे में भी हम आपको बताएंगे.

काशी विश्वनाथ मंदिर के अर्चक श्रीकांत मिश्र कहते हैं कि 12 ज्योतिर्लिंगों में काशी विश्वनाथ का नौवां स्थान है. मान्यता है कि अगर कोई भक्त बाबा विश्वनाथ के दरबार में हाजिरी लगाता है तो उसे जन्म-जन्मांतर के चक्र से मुक्ति मिल जाती है. बाबा का आशीर्वाद अपने भक्तों के लिए मोक्ष का द्वार खोल देता है.

ऐसी मान्यता है कि एक भक्त को भगवान शिव ने सपने में दर्शन देकर कहा था कि गंगा स्नान के बाद उसे दो शिवलिंग मिलेंगे और जब वो उन दोनों शिवलिंगों को जोड़कर उन्हें स्थापित करेगा तो शिव और शक्ति के दिव्य शिवलिंग की स्थापना होगी और तभी से भगवान शिव यहां मां पार्वती के साथ विराजमान हैं.

काल भैरव मंदिर

विश्वनाथ मंदिर में माला मिलने के बाद अब कालभैरव मंदिर में मेरे साथ अनोखा क्या होगा यह मनमें उत्सुकता थी । जब हम वहाँ पहूँचे तब वहा पर बहुत भीड़ थी प्रतीक्षा के बाद दर्शन मिले ।लौटकर बाहर आ रही थी तब वहा के एक पंडित ने हाथ में धागा बान लिया । । आरती के समय नगाड़े, घंटा, डमरू की ध्वनि बहुत ही मनमोहक लगती है। यहाँ बाबा को प्रसाद में बड़ा, शराब पान का विशेष महत्व है। यहाँ विषेश रूप से भूत-पिशाचादि के उपचार हेतु लोग आते हैं, तथा बाबा की कृपा से ठीक हो जाते हैं। यहाँ बालकों को काले धागे (गंडा) दिया जाता है, जिससे बच्चे भय-मुक्त हो जाते हैं। काशी में ऐसी मान्यता है, कि कोई भी प्राणी को मृत्यु से पूर्व यम यातना के रूप में बाबा काल भैरव के सोटे की

यातना का सामना करना होता है,हाँ परन्तु मान्यता यह भी है,कि केदार खंड काशी बासी को भैरव यातना भी नहीं भोगनी पड़ती है।

दुर्गा मंदिर

यह मंदिर बहुत ही मनमोहक है यह मंदिर, भारतीय वास्तुकला की उत्तर भारतीय शैली की नागारा शैली में बनी हुई है।

इस मंदिर में एक वर्गाकार आकृति का तालाब बना हुआ है जो दुर्गा कुंड के नाम से जाना जाता है। इस मंदिर का शिखर काफी ऊंचा है जो चार कोनों में विभाजित है और हर कोने में एक टावर और बहु- टावर लगे हुए हैं। यह इमारत लाल रंग से रंगी हुई है जिसमें गेरू रंग का अर्क भी है।
मंदिर में देवी के वस्त्र भी गेरू रंग के है। एक मान्यता के अनुसार, इस मंदिर में स्थापित मूर्ति को मनुष्यों द्वारा नहीं बनाया गया है बल्कि यह मूर्ति स्वंय प्रकट हुई थी, जो लोगों की बुरी ताकतों से रक्षा करने आई थी। नवरात्रि और अन्य त्यौहारों के दौरान इस मंदिर में हजारों भक्तगण श्रद्धापूर्वक आते है।

रामनगर फ़ोर्ट

जब हम वहा पर पहुंचे तो देखा की लोग किसी की मैयत में नाच रहे थे पहली बार किसी को मैयत में नाचते हुवे देखा। पुरे दिन साडी पहनकर नही रहा जा रहा था इसलिये वहा की छोटी से दुकान में कपड़े बदल दिये और वहा पर कुछ लोगो ने दही खाया तो किसिने चाय पी ली। हम किल्ले के प्रवेश द्वार से अंदर गये लेकीन वहा का दृश्य इतना मनमोहक नही था। और धुप के कारण थक भी गये थे इसलिये अन्दर न जाना ही उचित समझा और प्रवेश द्वार पर ही फ़ोटो निकालकर वहाँ से हम खाना खाने के लिए निकल गये । खाना खाने के बाद हम भारत कला भवन गये ।

भारत कला भवन

हमारे शिक्षकों ने समबन्धित अधिकरियों से पुछकर हमें अन्दर जाने के लिए पास निकाले । अन्दर कला साहित्य इतिहास और सांस्कृतिक धरोहरों में शामिल बीएचयू के भारत कला भवन को अपग्रेड किया जा रहा है। इसमें 15 गैलरी हैं जिसके रिनोवेशन का काम हो चुका है। भारत कला भवन की स्थापना सन् १९२० में हुई थी। विख्यात कला मर्मज्ञ तथा कलाविद पद्मविभूषण राय कृष्णदास 'भारत कला भवन' संग्रहालय के संस्थापक थे। उन्होंने अपना संपूर्ण जीवन 'भारत कला भवन' के लिए संग्रह हेतु समर्पित कर दिया। उनके जीवन का यही समर्पण और आत्मविश्वास आज 'भारत कला भवन' के रूप में काशी हिंदू विश्वविद्यालय को गौरवान्वित कर रहा है। विभिन्न कला कृतियों के संयोजन में तो उनकी अभिरुचि थी ही, किंतु भारतीय चित्रों के संकलन के प्रति

उनकी आत्मीय आस्था थी। यही कारण है कि 'भारत कला भवन' न केवल राष्ट्रीय स्तर पर अपितु अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर लघु चित्रों के संग्रह में अपना एक निजस्व रखता है। वहाँ मालवीय जी के कुछ चीजों का संग्रह कीया है।जैसे उनके द्वारा पहने जाने वाले कपड़ों का उनके दांतो का डाचा उनके जन्म से लेकर मरण तक की पुर्ण जानकारी है।

अब यहां की अमूल्य कृतियों को रखने के लिए मॉडर्न शो-केस और डिजिटल कियास्क तैयार किए जा रहे हैं। भारत कला भवन के निदेशक प्रो. एके सिंह ने बताया कि संग्रहालय में एक लाख से अधिक कलाकृतियां हैं।

आज हमारा बनारस में आखरी दिन था। तो आज घरपर ले जाने के लिए खरीददारी करने के लिये निकल गये। बाजर में बह्त भीड़ थी । पहले जाकर घुसे तो बनारसी साड़ी के दूकान में । वहा पर दुकानदार अपना कार्ड दिखाकरग्राहक को अपनी दुकान में आने के लिए मजबुर कर रहे थे । जिस दुकान में पहले गये वहा ज्यादा भीड़ होने के कारण मनपसंद साड़ी नही मिल पायी ।वहा से हम दुसरे दुकान पर चले गए दो तीन दुकानों में घूमने के बाद हमें मनपसंद चीजें मिली वहा का दम हमारे यहा के दाम से थोड़ा कम था तो दिल तो बह्त चीजें लेना चाहता था लेकिन बोज उठाने के विचार से ही इरादा बदल दिया ।जो कुछ अच्छा लगा वही हमने लिया। फ़िर भी और बह्त कुछ खरीदना बाकी रह गया था मन मारकर हम खाना खाने के लिये चले गये वहाँ सभी मिलकर एक दुसरे को बता रहे थे कि मेर यह लेना छुट गया । खाना खाकर जाते वक्त पता चला कि हम कल सुबह फ़िर से खरीददारी करने जा सकते हैं लेकिन 1 बजे तक आना है हम लोग सभी खुश हो गये । हॉटल जाने के बाद सबसे पहला काम था की बैग पैक करना तो पहले नहा धोके फ़िर पैकिंग शुरु की। कल कही नही जाना था तो हम आराम से सोये।

13 फरवरी 2020

शॉपिंग

आराम से 8 बजे उठकर चाय नाश्ता कर हम चले फ़िर से शॉपिंग करने के लिये पहले तो हमे रिक्शा के लिये मगजमारी करनी पड़ी बैठते वक्त एक दाम बताया और उतरते वक्त दाम बढाकर कहने लगे ।जैसे ही बजार पहुचे तो बताया की ठीक 12 बजे उस दुकान के सामने आना है । वहा से हम अलग अलग होकर ग्रुप में घूमने लगे ।पहले जाते ही हमने बनारसी दुप्पटा लिये और उसी दुकान में कुछ साड़ी या और कुर्ता सलवार खरीदे जो जिसके मन को लुब रहा था वह वही खरिद रहा था ।इसी बिच समचार मिला की हमारी ग्रुप की लड्की का फ़ोन चोरी हुवा है तब बिपिन सर की बहुत याद आयी लगा की हा उन्होने जो कहा था उसे हमनें अनुभव कर लिया। पता नहीं हम इतना डर गये तो उस पर क्या भीति होगी । तब तक 12 बज ही चुके थे तो आखिर में समान ज्यादा होने के कारण एक बैग खरीदा और हमें जिस जगह मिलनको कहा था वही आ गये हम सभी। लेकिन एक ग्रुप नही आया था। वे लोग 1 बजे आ गये।तब हमने रिक्शा की और हॉटल पर चले गये। फ्रेश होकर अगले सफ़र के लिये निचे उतरे सारी चबिया हॉटल वालो को लौटा दि। इतने दिन जिन्होंने इतनी अच्छी सेवा की उनके साथ एक तस्वीर तो बनती है। बैग उठाते वक्त पता चल रहा था की हमने बहुत कुछ ले लिया है ।लेकिन शुक्र है कि हॉटल वालों ने बैग बस तक लाकर दिया।

बस का सफ़र

बस को देखकर बहुत खुश हुये की हाँ बस तो बहुत बड़ी है आराम से सभी बैठकर बिहार जायेगें हम सबसे आगे चल रहे थे तो आराम से चढ़कर अपनी मन पसंद सीट पर जा बैठे मै खिडकी वाली सीट पर जा बैठी । सीट कम होने के कारण कुच बच्चों को बैठने नहीं मिला सफ़र की शुरुआत हुई । भोजन का समय था तो हमने जो रोटी और आलुगोबी हमने लाया था वह खाया और थोड़ी देर आराम के बाद हमनें अन्ताक्षरि खेलना शुरु किया। कुछ लोग गा रहे थे कुछ लोग सो रहे थे । शयाम होते होते एक ही जगह पड़े रहनें के कारण पूरा बदन दर्द करने लगा था । थोड़ी देर बाद अचानक से ही हमारे सामनेवाले खिड़क़ी की काँच ही टुट गया तो सभी डर गये पता नही अचानक ये सब कैसे हुवा । किलिडर ने आकर सीट पर गिरे काँच को साफ किया ।इसलिए हम एक ढाबे पे चाय पीने के लिये रुकें वहाँ की चाय बहुत ही अच्छी लगी चाय के साथ हमने रस मलाई

खाई

वह भी बहुत अच्छी थी । थोड़ा सा डर भी हलका हुवा तो मै बस में जाकर सो गयी । तो सीधे जाकर अगले ढाबे पे जाकर उठी ।भूक लगी थी इसलिय खाना खाने के लिये उतर गयी लेकिन थोड़े बच्चे बस में ही बैठे रहे। ढाबे को देखकर ही हमने 1 प्लेट 2 जनो में बाटकर खाई खाना बिल्कुल भी अच्छा नही था इसलिये थाली वैसे ही छोडनी पड़ी बस में जो हमारे दोस्त बैठे हुवे थे उन्होंने सैंडविच बनाकर खाया था तो मैने भी उनसे कहा की मुझे भी एक सैंडविच चाहिए तो उन्होनें तुरंत बनाकर दिया तो लगा की हा पेट में कुच तो गया है। उसके बाद पता नहीं कब आँख लग गयी। जब उठी तो बस एक जगह रुखी हुई थी। खिडक़ी के बाहर देखा तो पुरी सुनसान जगह दिख रही थी इसलिए खिड़की बंद कर फ़िर से सो गयी हम रात के 3 बजे के आसपास बोधगया पहुच गए थे और सुबह जब सब उठ गये तबी मै भी उठी ।

14 फरवरी 2020

बोधगया

हाथ मुह धोकर हम रिक्शा से बोध गया के लिये रवाना हो गये वहा के कच्चे

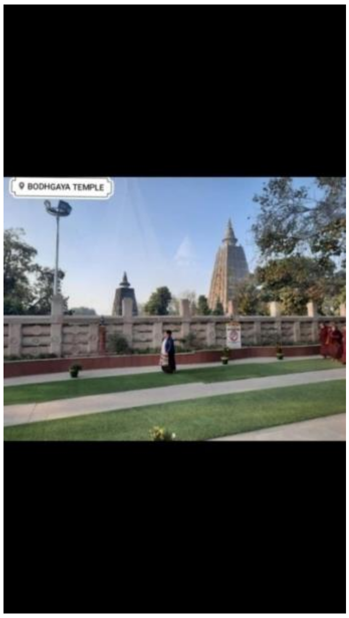

रास्ते और रिक्शा मे हम हिलते डूलते हम वहाँ पहुच गये वहाँ पर बहुत शांत वातावरण था। वहा पर नेपाली लोगों की संख्या ज्यादा थी काउंटर पर हमनें हमारा सामान रखवा दिया और हम बोद्ध के मंदिर में गये वहा पर बहुत लंबी कतार थी।और लोग चढावा चढ़ा रहे थे इसलिये दर्शन लेने में बहुत देर लग रही थी इसलिये हम दूर से ही दर्शन लेकर पीछे की तरह गये। बुद्ध के ज्ञान की यह भूमि आज बौद्धों के सबसे बड़े तीर्थस्थल के रूप में प्रसिद्ध है। आज विश्व के हर धर्म के लोग यहां घूमने आते हैं। इस मंदिर की बनावट सम्राट अशोक द्वारा स्थापित स्तूप के समान हे। इस मंदिर में बुद्ध की एक बहुत बड़ी मूर्त्ति स्थापित है। यह मूर्त्ति पदमासन की मुद्रा में है। यहां यह अनुश्रुति प्रचिलत है कि यह मूर्त्ति उसी जगह स्थापित है जहां बुद्ध को ज्ञान निर्वाण (ज्ञान) प्राप्त हुआ था। मंदिर के चारों ओर पत्थर की नक्काशीदार रेलिंग बनी हुई है। इस मंदिर परिसर में उन सात स्थानों को भी चिन्हित किया गया है जहां बुद्ध ने ज्ञान प्राप्ति के बाद सात सप्ताह व्यतीत किया था। जातक कथाओं में उल्लेखित बोधि वृक्ष भी यहां है। यह एक विशाल पीपल का वृक्ष है जो मुख्य मंदिर के पीछे स्थित है। कहा जाता बुद्ध को इसी वृक्ष के नीचे ज्ञान प्राप्त हुआ था। वर्तमान में जो बोधि वृक्ष वह उस बोधि वृक्ष की पांचवीं पीढी है। मंदिर समूह में सुबह के समय घण्टों की आवाज मन को एक अजीब सी शांति प्रदान करती है।

मुख्य मंदिर के पीछे बुद्ध की लाल बलुए पत्थर की 7 फीट ऊंची एक मूर्ति है। यह मूर्ति विजरासन मुद्रा में है। इस मूर्ति के चारों ओर विभिन्न रंगों के पताके लगे हुए हैं जो इस मूर्ति को एक विशिष्ट आकर्षण प्रदान करते हैं। कहा जाता है कि तीसरी शताब्दी ईसा पूर्व में इसी स्थान पर सम्राट अशोक ने हीरों से बना राजसिहांसन लगवाया था और इसे पृथ्वी का नाभि केंद्र कहा था। इस मूर्ति की आगे भूरे बलुए पत्थर पर बुद्ध के विशाल पदचिन्ह बने हुए हैं। बुद्ध के इन पदचिन्हों को धर्मचक्र प्रर्वतन का प्रतीक माना जाता है।

बुद्ध ने ज्ञान के बाद प्राप्ति दूसरा सप्ताह इसी बोधि वृक्ष के आगे खड़ा अवस्था में बिताया था। यहां पर बुद्ध की इस अवस्था में एक मूर्ति बनी हुई है। इस मूर्ति को अनिमेश लोचन कहा जाता है। मुख्य मंदिर के उत्तर पूर्व में अनिमेश लोचन चैत्य बना हुआ है।

मुख्य मंदिर का उत्तरी भाग चंकामाना नाम से जाना जाता है। इसी स्थान पर बुद्ध ने ज्ञान प्राप्त के बाद तीसरा सप्ताह व्यतीत किया था। अब यहां पर काले पत्थर का कमल का फूल बना हुआ है जो बुद्ध का प्रतीक माना जाता है।

महाबोधि मंदिर के उत्तर पश्चिम भाग में एक छतविहीन भग्नावशेष है जो रत्नाघारा के नाम से जाना जाता है। इसी स्थान पर बुद्ध ने ज्ञान प्राप्ति के बाद चौथा सप्ताह व्यतीत किया था। दन्तकथाओं के अनुसार बुद्ध यहां गहन ध्यान में लीन थे कि उनके शरीर से प्रकाश की एक किरण निकली। प्रकाश की इन्हीं रंगों का उपयोग विभिन्न देशों द्वारा यहां लगे अपने पताके में किया है।

माना जाता है कि बुद्ध ने मुख्य मंदिर के उत्तरी दरवाजे से थोड़ी दूर पर स्थित अजपाला-निग्रोधा वृक्ष के नीचे ज्ञान के बाद प्राप्ति पांचवा सप्ताह व्यतीत किया था। बुद्ध ने छठा सप्ताह महाबोधि मंदिर के दायीं ओर स्थित मूचालिंडा क्षील के नजदीक व्यतीत किया था। यह क्षील चारों तरफ से वृक्षों से घिरा हुआ है। इस क्षील के मध्य में बुद्ध की मूर्ति स्थापित है। इस मूर्ति में एक विशाल सांप बुद्ध की रक्षा कर रहा है। इस मूर्ति के संबंध में एक दंतकथा प्रचलित है। इस कथा

के अनुसार बुद्ध प्रार्थना में इतने तल्लीन थे कि उन्हें आंधी आने का ध्यान नहीं रहा। बुद्ध जब मूसलाधार बारिश में फंस गए तो सांपों का राजा मूचालिंडा अपने निवास से बाहर आया और बुद्ध की रक्षा की।

इस मंदिर परिसर के दक्षिण-पूर्व में राजयातना वृक्ष है। बुद्ध ने ज्ञान के प्राप्ति बाद अपना सांतवा सप्ताह इसी वृक्ष के नीचे व्यतीत किया था। यहीं बुद्ध दो बर्मी (बर्मा का निवासी) व्यापारियों से मिले थे। इन व्यापारियों ने बुद्ध से आश्रय की प्रार्थना की। इन प्रार्थना के रूप में बुद्धमं शरणम गच्छामि (मैं अपने को भगवान बुद्ध को सौंपता हू) का उच्चारण किया। इसी के बाद से यह प्रार्थना प्रसिद्ध हो गई।

तिब्बतियन मठ

(महाबोधि मंदिर के पश्चिमी में पांच मिनट की पैदल दूरी पर स्थित) जोकि बोधगया का सबसे बड़ा और पुराना मठ है 1934 ई॰ में बनाया गया था। बर्मी विहार (गया-बोधगया रोड पर निरंजना नदी के तट पर स्थित) 1936 ई॰ में बना था। इस विहार में दो प्रार्थना कक्ष है। इसके अलावा इसमें बुद्‌ध की एक विशाल प्रतिमा भी है। इससे सटा हुआ ही थाई मठ है (महाबोधि मंदिर परिसर से 1किलोमीटर पश्िचम में स्थित)। इस मठ के छत की सोने से कलई की गई है। इस कारण इसे गोल्डेन मठ कहा जाता है। इस मठ की स्थापना थाईलैंड के राजपरिवार ने बौद्‌ध की स्थापना के 2500 वर्ष पूरा होने के उपलक्ष्य में किया था। इंडोसन-निप्पन-जापानी मंदिर (महाबोधि मंदिर परिसर से 11.5 किलोमीटर दक्षिण-पशचिम में स्थित) का निर्माण 1972-73 में हुआ था। इस मंदिर का निर्माण लकड़ी के बने प्राचीन जापानी मंदिरों के आधार पर किया गया है। इस मंदिर में बुद्‌ध के जीवन में घटी महत्वपूर्ण घटनाओं को चित्र के माध्यम से दर्शाया गया है। चीनी मंदिर (महाबोधि मंदिर परिसर के पश्िचम में पांच मिनट की पैदल दूरी पर स्थित) का निर्माण 1945 ई॰ में हुआ था। इस मंदिर में सोने की बनी बुद्‌ध की एक प्रतिमा स्थापित है। इस मंदिर का पुनर्निर्माण 1997 ई॰ किया गया था। जापानी मंदिर के उत्तर में भूटानी मठ स्थित है। इस मठ की दीवारों पर नक्काशी का बेहतरीन काम किया गया है। यहां सबसे नया बना मंदिर वियतनामी मंदिर है। यह मंदिर महाबोधि मंदिर के उत्तर में 5 मिनट की पैदल

दूरी पर स्थित है। इस मंदिर का निर्माण 2002 ई॰ में किया गया है। इस मंदिर में बुद्ध के शांति के अवतार अवलोकितेश्वर की मूर्ति स्थापित है।

इन मठों और मंदिरों के अलावा के कुछ और स्मारक भी यहां देखने लायक है। इन्हीं में से एक है भारत की सबसे ऊंचीं बुद्ध मूर्ति जो कि 6 फीट ऊंचे कमल के फूल पर स्थापित है। यह पूरी प्रतिमा एक 10 फीट ऊंचे आधार पर बनी हुई है। स्थानीय लोग इस मूर्ति को 80 फीट ऊंचा मानते हैं।

हमने सुबह से नाश्ता नहीं किया था पेट में चूहे दौड रहे थे । इसलिये कूछ बच्चे बस में ही बैठे रहे और हम घूमने के लिए गये ।

मंगला गौरी

पहाड पर स्थित यह मंदिर मां शक्ति को समर्पित है। यह स्थान १८ महाशक्तिपीठों में से एक है। माना जाता है कि जो भी यहां पूजा कराते हैं उनकी मन की इच्छा पूरी होती है। इसी मन्दिर के परिवेश में मां काली, गणेश, हनुमान तथा भगवान शिव के भी मन्दिर स्थित हैं। मान्यता है कि यहां मां सती का वक्ष स्थल (स्तन) गिरा था, जिस कारण यह शक्तिपीठ 'पालनहार पीठ' या 'पालनपीठ' के रूप में प्रसिद्ध है. पौराणिक ग्रंथों के मुताबिक, भगवान भोले शंकर जब अपनी पत्नी सती का जला हुआ शरीर लेकर तीनों लोकों में उद्विग्न होकर घूम रहे थे तो सृष्टि को बचाने के लिए भगवान विष्णु ने मां सती के शरीर को अपने सुदर्शन चक्र से काटा था. इसी क्रम में मां सती के शरीर के टुकड़े देश के विभिन्न स्थानों पर गिरे थे, जिसे बाद में शक्तिपीठ के रूप में जाना गया. इन्हीं स्थानों पर गिरे हुए टुकड़े में स्तन का एक टुकड़ा गया के भस्मकूट पर्वत पर गिरा था.

सीतामढ़ी पौराणिक आख्यानों में त्रेतायुगीन शहर के रूप में वर्णित है। त्रेता युग में राजा जनक की पुत्री तथा भगवान राम की पत्नी देवी सीता का जन्म पुनौरा में हुआ था। पौराणिक मान्यता के अनुसार मिथिला एक बार दुर्भिक्ष की स्थिति उत्पन्न हो गाय थी। पुरोहितों और पंडितों ने मिथिला के राजा जनक को अपने क्षेत्र की सीमा में हल चलाने की सलाह दी। कहते हैं कि सीतामढ़ी के पुनौरा नामक स्थान पर जब राजा जनक ने खेत में हल जोता था, तो उस समय धरती

से सीता का जन्म हुआ था। सीता जी के जन्म के कारण इस नगर का नाम पहले सीतामड़ई, फिर सीतामही और कालांतर में सीतामढ़ी पड़ा।[1] ऐसी जनश्रुति है कि सीताजी के प्रकाट्य स्थल पर उनके विवाह पश्चात राजा जनक ने भगवान राम और जानकी की प्रतिमा लगवायी थी। लगभग ५०० वर्ष पूर्व अयोध्या के एक संत बीरबल दास ने ईश्वरीय प्रेरणा पाकर उन प्रतिमाओं को खोजा और उनका नियमित पूजन आरंभ हुआ। यह स्थान आज जानकी कुंड के नाम से जाना जाता है। प्राचीन कल में सीतामढी तिरहुत का अंग रहा है। इस क्षेत्र में मुस्लिम शासन आरंभ होने तक मिथिला के शासकों के कर्नाट वंश ने यहाँ शासन किया। बाद में भी स्थानीय क्षत्रपों ने यहाँ अपनी प्रभुता कायम रखी लेकिन अंग्रेजों के आने पर यह पहले बंगाल फिर बिहार प्रांत का अंग बन गया। १९०८ ईस्वी में तिरहुत मुजफ्फरपुर जिला का हिस्सा रहा। स्वतंत्रता पश्चात ११ दिसम्बर १९७२ को सीतामढी को स्वतंत्र जिला का दर्जा मिला, जिसका मुख्यालय सीतामढ़ी को बनाया गया।

दुपहर को हम एक हॉटल में खाने के लिये रुके तब उनका खाना तैयार नहीं था उन्होने हमें एक बड़े से हल्ल में बिठाया ।पहले से हो भूक से बेहाल थे और ऊपर से उनोने खाना बनाने में 1 घंटा लगाया उन्होंने खाना पकाकर हमें परोसा उस दिन हमें स्वाद की कोई परवा नहीं थी जो थाली में मिला वह भूक के लिये हमनें खा लिया ।

नालन्दा

जब हम नालन्दा जा रहे थे तब बार बार दिमाग नालन्दा पर गिद्ध कहानी की याद दिला रहा था जिस विश्वविधालय के बारे मे इतने दिनों से सुनते आ रहे थे आज उसे देखने का मौका मिल रहा था। वहा पहुचें तो बहुत सारे छोटे छोटे बच्चे मुर्तिया बेच रहे थे । हमारे शिक्षाको ने अन्दर जाने के लिये टिकट खरीदा और उसी के साथ एक गाईड लिया ताकी वह हम यूनिवर्सिटी के बारे में उचित ज्ञान दे सके ।उसने भी हमें बहुत अच्छी तरह से मार्गदर्शन दिया और वहा की सभी चीजों से परिचित करवाया। यह प्राचीन दरबे में उच्च शिक्षा का सर्वाधिक महत्वपूर्ण और विख्यात केन्द्र था। महायान बौद्ध धर्म के इस शिक्षा-केन्द्र में हीनयान बौद्ध-धर्म के साथ ही अन्य धर्मों के तथा अनेक देशों के छात्र पढ़ते थे। वर्तमान बिहार राज्य में पटना से ८८.५ किलोमीटर दक्षिण-पूर्व और राजगीर से ११.५ किलोमीटर उत्तर में एक गाँव के पास राहुल द्वारा खोजे गए इस महान बौद्ध विश्वविद्यालय के भग्नावशेष इसके प्राचीन वैभव का बहुत कुछ अंदाज़ करा देते हैं। अनेक पुराभिलेखों और सातवीं शताब्दी में दरबे के इतिहास को पढ़ने आया था के लिए आये चीनी यात्री ह्वेनसांग तथा इत्सिंग के यात्रा विवरणों से इस विश्वविद्यालय के बारे में विस्तृत जानकारी प्राप्त होती है। यहाँ १०,००० छात्रों को पढ़ाने के लिए २,००० शिक्षक थे। प्रसिद्ध चीनी यात्री ह्वेनसांग ने ७ वीं शताब्दी में यहाँ जीवन का महत्त्वपूर्ण एक वर्ष एक विद्यार्थी और एक शिक्षक के रूप में व्यतीत किया था। प्रसिद्ध 'बौद्ध सारिपुत्र' का जन्म यहीं पर हुआ था।

यह विश्व का प्रथम पूर्णतः आवासीय विश्वविद्यालय था। विकसित स्थिति में इसमें विद्यार्थियों की संख्या करीब १०,००० एवं अध्यापकों की संख्या २००० थी। सातवीं शती में जब ह्वेनसाङ आया था उस समय १०,००० विद्यार्थी और १५१० आचार्य नालंदा विश्वविद्यालय में थे। इस विश्वविद्यालय में भारत के विभिन्न क्षेत्रों से ही नहीं

बल्कि कोरिया, जापान, चीन, तिब्बत, इंडोनेशिया, फारस तथा तुर्की से भी विद्यार्थी शिक्षा ग्रहण करने आते थे। नालंदा के विशिष्ट शिक्षाप्राप्त स्नातक बाहर जाकर बौद्ध धर्म का प्रचार करते थे। इस विश्वविद्यालय को नौवीं शताब्दी से बारहवीं शताब्दी तक अंतर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त थी।

अत्यंत सुनियोजित ढंग से और विस्तृत क्षेत्र में बना हुआ यह विश्वविद्यालय स्थापत्य कला का अद्भुत नमूना था। इसका पूरा परिसर एक विशाल दीवार से घिरा हुआ था जिसमें प्रवेश के लिए एक मुख्य द्वार था। उत्तर से दक्षिण की ओर मठों की कतार थी और उनके सामने अनेक भव्य स्तूप और मंदिर थे। मंदिरों में बुद्ध भगवान की सुन्दर मूर्तियाँ स्थापित थीं। केन्द्रीय विद्यालय में सात बड़े कक्ष थे और इसके अलावा तीन सौ अन्य कमरे थे। इनमें व्याख्यान हुआ करते थे। अभी तक खुदाई में तेरह मठ मिले हैं। वैसे इससे भी अधिक मठों के होने ही संभावना है। मठ एक से अधिक मंजिल के होते थे। कमरे में सोने के लिए पत्थर की चौकी होती थी। दीपक, पुस्तक इत्यादि रखने के लिए आले बने हुए थे। प्रत्येक मठ के आँगन में एक कुआँ बना था। आठ विशाल भवन, दस मंदिर, अनेक प्रार्थना कक्ष तथा अध्ययन कक्ष के अलावा इस परिसर में सुंदर बगीचे तथा झीलें भी थी। प्रवेश के नियम

प्रवेश परीक्षा अत्यंत कठिन होती थी और उसके कारण प्रतिभाशाली विद्यार्थी ही प्रवेश पा सकते थे। उन्हें तीन कठिन परीक्षा स्तरों को उत्तीर्ण करना होता था। यह विश्व का प्रथम ऐसा दृष्टांत है। शुद्ध आचरण और संघ के नियमों का पालन करना अत्यंत आवश्यक था।

अवसान

१३ वीं सदी तक इस विश्वविद्यालय का पूर्णतः अवसान हो गया। मुस्लिम इतिहासकार मिनहाज़ और तिब्बती इतिहासकार तारानाथ के वृत्तांतों से पता चलता है कि इस विश्वविद्यालय को तुर्कों के आक्रमणों से बड़ी क्षति पहुँची। तारानाथ के अनुसार तीर्थिकों और भिक्षुओं के आपसी झगड़ों से भी इस विश्वविद्यालय की गरिमा को भारी नुकसान पहुँचा। इसपर पहला आघात हुण शासक मिहिरकुल द्वारा किया गया। ११९९ में तुर्क आक्रमणकारी बख्तियार खिलजी ने इसे जला कर पूर्णतः नष्ट कर दिया।

और यहीं पर हमारे यात्रा का अंत हो गया । उसकी याद में हमने वहा पर एक ग्रुप में तस्वीर खिचिं ।

और वहा से अब हमें पटना 4 घंटे का सफ़र फ़िर से बस से तय करके जाना था । 4 घंटे का सफ़र बहुत लबा रहा।जिस हॉटल में हमनें बूकिंग किया था वह बहुत अन्दर था इसलिये बस वहा तक नहीं जा रही थी और वह भी हमें लेने आगे नहीं आ रहे थे ।इसलिये हमें दुसरा हॉटल दुड़ना पडा । उस हॉटल में हम करीब 10 बजे पहुचे थे। बस वाले ने हमे बिच रास्ते में छोड़ा था तो वहा से पैदल चलकर हॉटल तक जाना था इसलिये समान रिक्शा से लेकर आये और हम लोग चलकर। वहा पर हम एक

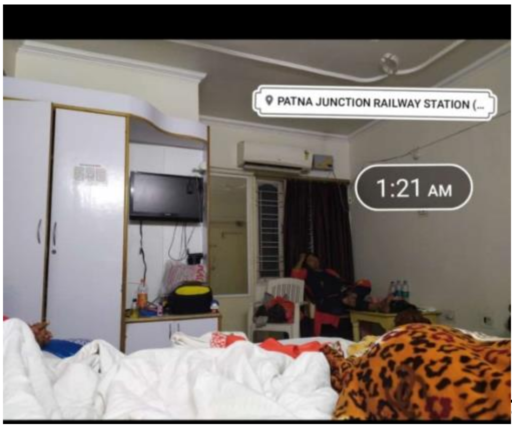

कमरे में 6 लोग रह रहे थे । पहले हमनें अपना समान कमरे में रखा तब पता चला कि अक्षता का बैग बस में ही रह गया था ।जब पता चला तब तक बस वहा से निकल गई थी ।

करीब 11 बजे के आसपास वह ऑर्डर लेने आये थे। जब हॉटल के लोग एक्स्ट्रा बिस्तर लगाने के लिये कमरे में आये तो उन्होने बताया कि गरम पानी एक घंटे बाद आयेगा इसलिये थोड़ा इंतजार किया और बाद में एक एक कर नहाने चले

गये फ़िर भी गरम पानी नही आया ।कड़कड़ाती ठण्ड और उसमें ठानदे पानी मे नहाना बडा मुश्किल लग रहा था लेकिन रात के 1 बजे उसी ठण्ड में ठण्डे पानी से नहाए । करीब 11 बजे के आसपास वह ऑर्डर लेने आये थे।लेकिन वे 2 बजे खाना लेकर आये थे।।एक तो बस में सफ़र करने से कमर दुख रही थी तो दुसरी तरफ पेट में चूहे दौड़े रहे थे।हम तो बस खाना खाकर झट से सो गये ।

15 फरवरी 2020

हम सुबह आराम से उठकर हम चाय की तलाश में निकल गये ।बाहर देखा तो हॉटल में लोग 9 बजे ही खाना खा रहे थे बहुत घूमने के बाद रस्ते के किनारे एक छोटी सी टपरी पे हमनें चाय पी ली और वापस हॉटल में

जाकर अच्छी तरह से बैग पैक कर लिया। हॉटल के ठीक सामने ही स्टेशन था तो बैग उठाकर ज्यादा चलने की जरुरत नहीं थी । हमारी ट्रेन 12 की थी घर जाने के उत्साह मे हम हॉटल से 11 बजे ही निकल गये ।जाते वक्त हमनें में खाने के लिए पहले ही पार्सल ले लिया था । ट्रेन लगी हुई थी सब लोग जाकर एक ही डिबे जा गुस्से थोड़ी सिट्स अलग थी । s7 में सीट न होने के कारण हम s10 में जाकर चढ़े हुवा यु की हमारा पुरा 7 लड़कियो का ग्रुप ही चढ़ा हमारे साथ कोई भी लड़का नहीं था । बाद में हमारे साथ एक लड़के को भेजा गया और हमारे पास सिर्फ़ उप्पर की ही सीट थी । और 2 लड़कियो को अलग सीट मिल रही थी। तो हमनें जो निचे बैठे थे उनसे कहा की थोड़ा ऐडजस्ट करे लेकिन वे माने नहीं।हम सभी अपनी अपनी जगह जा बैठे और हम आपस मैं बाते कर रहे थे ।तबी जो निचे बैठा था वह फोन पर किसी से खुन करने की बाते कर रहा था ।तो हम सब डर के मारे चुप हो गये

जैसे ही ट्रेन छूटी तो हमने जो पार्सल लाया था वह खा लिया । और हम सो गये और सीधे श्याम को उठ गये जो हमारे पास खाने के लिए था वह हम सब ने मिलकर खा लिया । हमनें उस दिन पुरा सो सो के निकाल लिया ।

16 फरवरी 2020

दुसरे दिन सुबह उठकर हमने स्टेशन वाली चाय और समोसे खाये । उठे तो पता चला की कल रात को सर का फ़ोन चोरी हो गया । जैसे जैसे ट्रेन आगे बढ़ी तो खाने की ऑर्डर लेने आये तो हमनें खाने की ऑर्डर दी लेकिन उसका कोई नामो निशान नहीं था ।जोरो की भूक लगी थी । तभी हमारा खाना आ गया । जिस इनसान से पहले हम डर रहे थे उसी से हमारी अच्छी बनी निचे के जो सीट हमारी नहीं थी उसी पर कब्जा कर लिया । श्याम तक उसी सीट पर वही बैठे रहे चाय पीने के बाद हम अपने दोस्तों से मिलने के लिए दुसरे डब्बे में चले गए ।हमारे दोस्त भी हमसे मिलने आये तो समय कैसे हसी मजाक के साथ बिता कुछ पता 7नहीं चला। जैसे ही स्टेशन आता तो अपनी सीट पर आकर बैठ जाते । जैसे जैसे हम महाराष्ट्र में पहुचने लगे थे तब गर्मी बढ़ रही थी । रात को हम जल्दी ही सो गए थे क्योंकि सुबह ट्रेन जल्दी पहुचने वाली थी।

17 फरवरी 2020

तीसरे दिन हम सुबह घर पहुचने वाले थे इसलिये उत्साह से हम 4 बजे ही उठ गये जबकी हम 8 बजे मड्गाव स्टेशन पर पहुचने वाले थे । सिर्फ़ हम ही नही बल्कि हमारे सीट पर जो 2 लोग हमारे साथ गोवा जा रहे थे उनको भी हमने उठा लिया ।पहुचने वाले थे की क्रॉसिंग के लिए हमारी ट्रेन 1 घंटा रुक गई ।एक तो हमें घर जाने की जल्दी थी और दुसरी तरफ ये ट्रेन देर करवा रही थी गोवा आते आते उसकी स्पीड भी कम हो गई थी। पुरा एक घंटा देर करवा दिया । जब मड्गाव स्टेशन पर पहुचे तो लगा भाई पहुच गए हम घर।।मेरे पिताजी स्टेशन के बाहर मेरा इंतजार कर रहे थे । और इसी के साथ मेरे बनारस की यात्रा का अंत सुखद हुवा।

निष्कर्ष

बनारस बाबा विश्वनाथ की नगरी और गंगा के साथ विशिष्ट आस्था का केंद्र है ।बनारस में गंगा और गंगा के घाट,मंदिर तथा घाटों के किनारे क्रिया-कलापों के नाम पर लोगों को ठगने वाले पंडितों को देखा जा सकता है ।

इस शहर के साथ मिथकीय आस्था है काशी और गंगा के सानिध्य से मोक्ष की अवधारणा जुड़ी है ।गंगा में बंधी नाव एक मन्दिरों घाटों पर जलने वाले दीप तो दुसरी तरफ कभी न बुजने वाली चिताग्नि,उनसे तथा हवन इत्त्यादि से उठने वाला धुवा यही तो है बनारस ! आस्था श्रध्दा,विरक्ति,विश्वास,आश्चर्यऔर भक्ति का मिला जुला रूप बनारस है,काशी की अति प्राचीनता आध्यात्मिकता एवं भव्यता के साथ आधुनिकता का समाहार मौजूद है ।पुरातन शहर के रहस्य को खोलते हुए शहर की मिथकता को बनारस भलीभांति दर्शाता है ।